शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में संगीत की भूमिका

प्राप्तिः 13.02.2025
स्वीकृतः 18.03.2025

प्रो0 (डॉ0) अनिता रानी
श्रीमती बी0 डी0 जैन गर्ल्स
पी0 जी0 कॉलेज, आगरा।
ईमेलdr.anita80@gmail.com

1

सारांश

संगीत प्रारम्भ से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है तथा यह हर संस्कृति, धर्म और परंपरा में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रारम्भ से मानव संस्कृति, धर्म और परंपरा में, संगीत पूर्ण रूप से समाहित रहा है। संगीत केवल एक कला का रूप ही नहीं बल्कि यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा है फिर चाहे वह सांस्कृतिक पक्ष हो, धार्मिक पक्ष हो या सामाजिक पक्ष हो। दुनियाँ की विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में संगीत का महत्व अनमोल एवं अद्वितीय है।

संगीत एक ऐसी कला है जो मनोरंजन के साथ–साथ मनुष्य के भावनात्मक, मानसिक व आत्मिक विकास में भी विशेष योगदान करता है। दुनियाँ में विभिन्न संस्कृतियाँ समाहित हैं तथा इन विभिन्न संस्कृतियों में संगीत की एक विशिष्ट भूमिका है। संगीत एक ऐसी कला है जो किसी विशिष्ट देश की संस्कृति को दर्शाने का कार्य करती है तथा वहाँ की परम्पराओं का सहेजन में अहम भूमिका निभाती है। विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में संगीत की भूमिका भिन्न प्रकार से प्रकट होती है किन्तु सभी जगह इसका उद्देश्य मानव के जीवन को समृद्ध बनाना एवं आत्मा को शांति देना ही है।

मुख्य बिन्दु

संस्कृति का अर्थ, परंपराओं का अर्थ एवं महत्व, संगीत का अर्थ, विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में संगीत की भूमिका, निष्कर्ष

संस्कृति का अर्थ

सामान्य भाषा में किसी समाज के लोगों के सामाजिक व्यवहार, रीति–रिवाज, मान्यताऐं, सोचना–विचारना, संगीत, कलाएँ, रिवाज, कानून, परम्पराऐं, खान–पान आदि का समूह संस्कृति कहलाता है। संस्कृति एक समाज के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है। ''संस्कृति एक ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते है, किन्तु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते।'' संस्कृति मानव के व्यवहार में व्याप्त होती है तथा लोगों के बीच संचार के माध्यम से एवं अनुकरण के माध्यम से यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। प्रत्येक समाज की अपनी भिन्न सांस्कृतिक विशेषताएं होती हैं एवं उसी के आधार पर वहाँ के रीति–रिवाज, कलाएँ, परम्पराऐं, संगीत, खान–पान आदि में भिन्नताऐं पाई जाती हैं।

परंपराओं का अर्थ एवं महत्व

मानव के जीवन में परंपराओं का विशेष महत्व है। परंपराऐं मानव के अटूट विश्वास पर आधारित होती हैं। परंपराओं के अन्तर्गत संस्कार, रीति–रिवाज, भाषा, धर्म, विचार तथा कलाएँ आदि सम्मिलित होती है। मानव अपने विश्वास के आधार पर अपनी परम्पराओं को सैकड़ों सालों तक जीवंत रखने का प्रयास करता है। परम्पराऐं एक अविच्छिन्न श्रृंखला के समान, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी द्वारा अपनायी जाती है। और इसी प्रकार प्रत्येक पीढ़ी अपने पूर्व की पीढ़ी द्वारा प्रदान की गई परंपराओं का पालन पूर्ण निष्ठा एवं विश्वास के साथ करती है।

संगीत का अर्थ

सामान्य अर्थ में गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहते हैं। ये तीनों ही कलाएँ संगीत में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। संगीत का प्रारम्भ मानव की सभ्यता के प्रारम्भ के साथ जुड़ा हुआ है एवं मानव के विकास के साथ ही संगीत भी विकसित एवं परिवर्तित होता गया। संगीत एक ऐसी कला है जो प्रारम्भ से ही मानव से भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई है। व्यक्ति जब खुशी का अनुभव करता है तो वह स्वयं ही गाने व नाचने लगता है। संगीत ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है,. फिर चाहे वह धार्मिक क्षेत्र हो या सामाजिक। अपने भावों को व्यक्त करने हेतु मानव संगीत का सहारा लेता है। संगीत के स्वर मानव के भावों को जागृत करने में विशिष्ट रूप से सहायक होते हैं। जिस प्रकार मानव का निर्माण प्रकृति ने स्वयं किया है उसी प्रकार संगीत का निर्माण भी प्रकृति व्दारा ही किया गया है। संगीत दर्पण के लेखक दामोदर पंडित के अनुसार सात स्वरों की उत्पत्ति पशु–पक्षियों की आवाजों के द्वारा हुई मानी गई है जैसे– सा की मोर से, रे की चातक से, ग की बकरे से, म की कौआ से आदि। मानव तथा संगीत, ये दोनों ही प्रकृति की अनमोल देन हैं। अतः इन दोनों का सम्बन्ध भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ है।

विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में संगीत की भूमिका

संगीत एक, ऐसी कला है जो प्रारम्भ से ही मानव की जीवन शैली में शामिल रहा है। प्रारम्भ से ही संगीत मानव की संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। हमारी दुनियाँ विभिन्न देशों से मिलकर बनी है। जिनकी अपनी–अपनी संस्कृति एवं परंपराएँ हैं तथा यहाँ की संस्कृतियों में संगीत का भिन्न रूप नजर आता है।

1. भारतीय संस्कृति में संगीत की भूमिका

भारतीय संस्कृति में संगीत का अत्यधिक महत्व है। भारत में संगीत को ईश्वर प्राप्ति का साधन माना जाता है। संगीत यहाँ के लागों की संस्कृति एवं परम्पराओं में पूरी तरह से रचा बसा है। भारत में विभिन्न भाषाओं एवं विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं तथा इन सभी की परम्पराऐं एवं संस्कृतियाँ एक दूसरे से भिन्न नजर आती है। यहाँ पर संगीत के विभिन्न रूप देखे जा सकते है जैसे–धार्मिक संगीत, शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत ।

धार्मिक संगीत

भारत में धार्मिक सन्दर्भों में संगीत का महत्व विशेष रूप से देखा जाता है। यहाँ पर हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख व ईसाई धर्मो के लोग एक साथ निवास करते है। हिन्दू धर्म में संगीत एवं गायन, पूजा का एक अभिन्न अंग है। पूजा के दौरान भजन, कीर्तन, आरती आदि यहाँ की हिन्दू संस्कृति में आदि काल से चली आ रही परम्परा है। यहाँ धार्मिक गीतों के माध्यम से भक्ति का अनुभव किया जाता है। मुस्लिम धर्म में कव्वाली आदि के माध्यम से अपने खुदा को याद किया जाता है। इसी प्रकार सिक्ख धर्म में शबद, कीर्तन का विशेष महत्व है सिक्ख धर्म में गुरबानी के माध्यम से धार्मिक उन्नति होती है तथा आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

शास्त्रीय संगीत

भारतीय शास्त्रीय संगीत हजारों वर्षो से भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित है। शास्त्रीय संगीत राग एवं ताल के सिध्दान्त पर आधारित है। शास्त्रीय संगीत, सुनने वाले के मन और आत्मा को शुद्ध करने का कार्य करता है। भारत में शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख शैलियाँ हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत प्रचलित हैं। ये दोनों ही संगीत पद्धतियाँ अपनी–अपनी पृथक विशेषताएँ रखती हैं किन्तु प्रथक होते हुए भी ये दोनों एक ही प्रतीत होती हैं। शास्त्रीय गायन की इन दोनों ही शैलियों का एक ही उद्देश्य, आत्मिक अनुभूतियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं।

लोक संगीत

भारत में लोक संगीत का इतिहास अत्यन्त पुराना है। लोक संगीत यहाँ के लोगों के हृदय से जुड़ा हुआ है। भारत में लोक संगीत की विविधता देखने को मिलती है। जैसे– राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, कर्नाटकी लोक संगीत आदि। इन लोक गीतों के माध्यम से यहाँ की संस्कृति, स्थानीय जीवन, त्यौहारों तथा धार्मिक आस्थाओं के दर्शन होते हैं। लोक संगीत बहुत ही सरल होते है तथा इनका हस्तान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से ही किया जाता है।

पश्चिमी संस्कृति में संगीत की भूमिका

पश्चिमी संस्कृति में संगीत का अति समृध्द और विविधतापूर्ण इतिहास प्राप्त होता है। माना जाता है कि पश्चिमी संगीत की उत्पति एवं विकास यूरोप में हुआ है किन्तु इसका प्रभाव सम्पूर्ण दुनिया पर पड़ा है। पश्चिमी संगीत का प्राथमिक उद्देश्य धार्मिक था। यहाँ संगीत के माध्यम से परमात्मा को याद किया जाता था। पश्चिमी संगीत के प्रमुख रूपों में शास्त्रीय संगीत, जैज़, रॉक, पॉप और ब्लूज़ शामिल हैं।

शास्त्रीय संगीत

पश्चिमी शास्त्रीय संगीत 18वीं एवं 19वीं सदी में अपने उच्च शिखर पर था। यह समय शास्त्रीय युग के नाम से जाना जाता है। पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में बाख, बीथोवन, मोजार्ट जैसे संगीतज्ञों ने संगीत को एक नई दिशा दी। पश्चिमी शास्त्रीय संगीत में ऐसे कई संगीतकार हुए जिन्होंने विभिन्न संगीतात्मक रूपों का विकास किया, जैसे– सिम्फनी, ऑपेरा तथा कॉन्सर्टों आदि। पश्चिमी संगीत में विभिन्न वाद्ययन्त्रों जैसे– पियानो, ऑर्केस्ट्रा, गिटार आदि वाद्य यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

पश्चिमी संगीत का आधुनिक रूप

पश्चिमी संगीत में जैज़ एवं पॉप संगीत का उदय 20वीं सदी में हुआ। जैज़ एक ऐसी संगीत शैली है, जो विभिन्न संगीत शैलियों से विकसित हुई है। जैज़ संगीत की उत्पत्ति न्यू ऑरलियन्स, लुइसियाना में हुई है एवं इसका जन्म अफ्रीकी व अमेरिकी संस्कृति से हुआ है। इसमें रचनात्मकता व स्वतन्त्र सृजन का गुण विद्यमान होता है। वहीं पाश्चात्य संगीत के दूसरे रूप पॉप संगीत ने सम्पूर्ण दुनिया में लोकप्रियता हासिल कर ली है। रॉक संगीत का प्रारम्भ 1950 के दशक में हुआ एवं 1990 के दशक तक यह विश्व प्रसिद्ध संगीत बन चुका था। इसे रॉक एंड रोल भी कहा जाता है। ब्लूज, पाश्चात्य संगीत की एक धर्मनिरपेक्ष अफ्रीकी–अमेरिकी संगीत शैली है। ऐसा माना जाता है कि ब्लूज़ विभिन्न विषयों एवं भावनाओं से सम्बन्धित होते हैं। ब्लूज़ संगीत 20 कीं शताब्दी में अत्यधिक प्रचार में आया।

अफ्रीकी संस्कृति में संगीत की भूमिका

अफ्रीका में संगीत का विशेष महत्व है। संगीत यहाँ की संस्कृति में पूर्ण रूप से समाहित है। अफ्रीकी समाज में संगीत का उपयोग न केवल मनोरंजन के रूप में किया जाता है बल्कि संगीत यहाँ के

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का भी महत्वपूर्ण अंग है। यहाँ के सभी लोग संगीत में भाग लेते हैं। यहाँ का संगीत अफ्रीकी मूल्यों को उजागर करने वाला है तथा यहाँ की संस्कृति को पूर्ण रूप से परिचित कराता है। अफ्रीकी संगीत को दो शैलियों में बाँटा जा सकता है– पारंपरिक संगीत व लोकप्रिय संगीत।

पारंपरिक व लोकप्रिय अफ्रीकी संगीत

पारंपरिक संगीत विशेष परंपराओं और मान्यताओं से जुड़ा होता है। इस प्रकार के संगीत में कहानी, इतिहास व परंपराओं का गायन किया जाता है। अफ्रीकी संगीत का एक विशिष्ट तत्व है रिद्म, जो इस संगीत को अन्य शैलियों से भिन्न बनाता है। अफ्रीकी संगीत में नृत्य का भी विशेष स्थान है यहाँ नृत्य और संगीत को पृथक करना मुश्किल है। यहाँ मानव शरीर को टैपिंग इस्ट्रूमेंट के रूप में प्रयोग किया जाता है। नृत्य के दौरान ताली बजाना, पैर पटकना तथा छाती व जांघ पर थपकी दी जाती है। सम्पूर्ण अफ्रीका में विभिन्न वाद्य यन्त्र प्रचलित हैं जिन्हें चार अलग–अलग श्रेणियों में बाँटा गया है– ड्रम, पवन, स्व–ध्वनि तथा तार वाद्य यन्त्र। इन वाद्य यन्त्रों में से अफ्रीकी ड्रम का स्थान प्रमुख है जिसे समुदाय का ह्रदय भी कहा जाता है। लोकप्रिय संगीत के अंतर्गत अफ्रीका में पॉप संगीत काफी पसंद किया जाता है। यह एक विविधता पूर्ण एवं निरंतर विकसित होने वाली शैली है। इस गायन शैली में पारंपरिक अफ्रीकी संगीत एवं पश्चिमी पॉप संगीत दोनों का ही प्रभाव दिखाई पड़ता है।

अफ्रीकी धर्म और संगीत

अफ्रीका में संगीत को अक्सर धार्मिक अनुष्ठानों और अनुष्ठानिक क्रियाओं से जोड़ा जाता है। अफ्रीकी धार्मिक संगीत में हाथी के दांत, ड्रम और अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है। इन वाद्य यंत्रों का संगीत में गहरा प्रभाव पड़ता है तथा यह समुदाय के लोगों को एकजुट कर अध्यात्मिक अनुभव प्रदान करने का साधन बनता है।

चीन संस्कृति में संगीत की भूमिका

चीनी संस्कृति का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है तथा संगीत प्रारम्भ से ही चीन की संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। ''संगीत के लिए चीन में यूवो शब्द (You) का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है पवित्रता।'' चीनी संगीत में पेंटाटोनिक स्केल का प्रयोग होता है। यहाँ का संगीत अत्यन्त ही समृद्ध है। इसमें एकल स्वरों से लेकर समृद्ध आर्केस्ट्रा तक का संगीत वादन सुना जा सकता है। चीनी परम्परा में संगीत का प्रयोग धार्मिक समारोहों एवं शादियों के अवसर पर होता है। इन अवसरों पर विभिन्न प्रकार के नृत्य प्रदर्शन भी किये जाते है। चीनी संगीत पश्चिमी शैलियों से प्रभावित रहा है। जिस प्रकार भारतीय संगीत में गायन की प्रधानता है उसी प्रकार चीन के संगीत में वाद्यों के वादन की प्रधानता रहती है। यहाँ वाद्यों का वर्गीकरण वाद्ययन्त्रों की वस्तुओं के पदार्थ के आधार पर किया जाता है। चीनी संगीत में बांस, रेशम, मिट्टी, पत्थर व लौकी आदि सामग्रियों से निर्मित वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। चीनी वाद्य यन्त्रों में प्रमुख हैं– ते–चिंग, पिएन–चिंग, बेल चाइम, पो–चुँग, पिएन–चुंग, गौंग, पो–फू, टाओकू, पैंगूक, पई–सिआओ, एरहू, गुझेंग तथा डिजी आदि। आधुनिक वाद्ययन्त्रों में पियानों एवं गिटार आदि शामिल हैं।

चीन संस्कृति में संगीत की विभिन्न शैलियाँ पाई जाती है। चीनी परंपरा में सबसे प्रमुख संगीत 'लोक संगीत ' कहलाता है इसके अन्तर्गत 'कैंटोनीज' और 'होक्किएन संगीत क्षेत्रीय शैलियों के रूप में जाने

जाते है। वर्तमान में चीनी हिप–हॉप, रॉक एवं इलैक्ट्रोनिक संगीत भी प्रचलित संगीत के प्रकार है। चीनी संस्कृति में संगीत की मुख्य शैलियों में से पारंपरिक चीनी संगीत, कैंटोपॉप एवं मंडोपॉप प्रमुख हैं। इन शैलियों की उत्पत्ति हांगकांग एवं ताइवान में हुई है तथा इन पर पश्चिमी पॉप संगीत का अत्यधिक प्रभाव है।

ग्रीस संस्कृति में संगीत की भूमिका

ग्रीस की संस्कृति में संगीत का बहुत महत्व है। यहाँ का संगीत ऐतिहासिक तथा अत्यन्त समृद्ध है। यहाँ के लोगों के जीवन में संगीत पूर्ण रूप से सम्मिलित है। यहाँ के लोग छोटी उम्र से ही अपने बच्चों को संगीत की शिक्षा दिलाना प्राराम्भ कर देते हैं। संगीत यहाँ की शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा है। ग्रीस के संगीत को दो भागों, ग्रीस पारंपरिक संगीत एंव बीजान्टिन संगीत में बाँटा जाता है। प्राचीन काल में संगीत यहाँ के रंगमंच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। उस काल के लोग सामाजिक या धार्मिक उत्सव के अवसर पर समूह गायन किया करते थे। उस समय के वाद्ययन्त्रों में डबल–रीड औलोस तथा प्लक्ड स्ट्रिंग इंस्ट्रूमेंट जैसे–पांडुरा आदि का प्रयोग किया जाता था। प्रचीनकाल में यहाँ धार्मिक समारोहों, शादियों, त्यौहारों, अन्तिम संस्कारों आदि अवसरों पर संगीत बजाने हेतु वाद्य यन्त्रों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रयोग होता था। ग्रीस संस्कृति में संगीत को देवी–देवताओं का वरदान माना जाता है। वाद्यों की उत्पत्ति का श्रेय भी देवी–देवताओं को दिया जाता है। एथेना को बाँसुरी, पैन को पैनपाइप तथा हेमीज को लिरे की उत्पत्ति का श्रेय दिया जाता है।

वर्तमान में ग्रीस संस्कृति में संगीत की विभिन्न शैलियाँ प्राप्त होती हैं। ग्रीस संगीत की शैलियों में से सबसे प्रसिद्ध संगीत शैलियों में से एक है 'रेबेटिको'। इसका आगमन एशिया माइनर से आने वाले ग्रीस शरणार्थियों द्वारा हुआ। इस प्रकार के गीतों के माध्यम से शरणार्थियों ने अपनी भूख, गरीबी व दर्द की भावनाओं को व्यक्त किया। इसी प्रकार ग्रीस संगीत की एक शैली 'एलाफ्रो' है जो रोमांस एवं तीव्र भावनाओं को व्यक्त करने वाली एक संगीत की शैली है। इसी प्रकार की ग्रीस संगीत की एक शैली है कांटाडा। यह यहाँ के लोक गीत का एक प्रकार है जिसकी उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में केफालोनिया द्वीप से हुई थी। इनके अतिरिक्त अक्रिटिक शैली, क्लेफ्टिक शैली, निसियोटिका, क्रेटन संगीत आदि ग्रीस संगीत शैलियों के प्रकार हैं। इन सभी संगीत शैलियों की अपनी–अपनी विशेषताऐं है।

जापान संस्कृति में संगीत की भूमिका

Laronsse Encyclopedea of Music में जापान के संगीत की उत्पत्ति के सन्दर्भ में उल्लेख प्राप्त होता है इसके अनुसार अभाते रासु (सुर देवता की पत्नी) को जब अन्य देवताओं द्वारा अपमानित किया गया तो उन्होंने एक गुफा में शरण ली। देवताओं ने उन्हें बाहर निकालने हेतु विभिन्न प्रयास किये किन्तु सारे प्रयास विफल रहे। अन्ततः संगीत के माध्यम से सभी देवता उन्हें प्रभावित करने में सफल रहे। तभी से जापान की धरती पर संगीत का जन्म हुआ। जापान की संस्कृति अति प्राचीन है। यहाँ के प्राचीन संगीत में यहाँ के शिन्टो धर्म सम्बन्धी पद गेय रूप में उपलब्ध होते हैं। जापानी संस्कृति में संगीत का प्रारम्भ लोक संगीत से हुआ। धीरे–धीरे यहाँ का संगीत धर्म से जुड़ा तथा मंदिरों में जा पहुँचा तत्पश्चात यहाँ का संगीत यहाँ के राज–दरबारों का हिस्सा बना। यहाँ की संस्कृति में प्रारम्भ से ही संगीत का विशेष महत्व है। जापान में प्रारम्भ से प्रतिष्ठित परिवार के लोगों द्वारा संगीत सीखने की प्रथा थी तथा संगीत शिक्षा यहाँ अनिवार्य मानी जाती थी।

जापान के संगीत पर चीन, कोरिया तथा मंचूरिया के संगीत का प्रभाव पड़ा। यहाँ पर पाँच स्वरों वाला सप्तक मान्य है जिसे चीनी परम्परा से लिया गया है। वर्तमान में जापान में संगीत को दो शैलियाँ पारंपरिक तथा आधुनिक संगीत प्रचलित है। जापानी 'पारंपरिक' संगीत की एक विशेषता है कि यह गणितीय समय के बजाय मानव द्वारा सांस लेने के अंतराल पर आधारित है। जापान में संगीत के लिए 'ओंगाकु' संज्ञा प्रयोग की जाती है। जापान के पारंपरिक संगीत का पहला स्वरूप नारा काल एवं हीयान काल में प्राप्त होता है। नारा काल का संगीत यहाँ के संगीत का सबसे पुराना काल माना जाता है एवं इसे पहले अर्न्तराष्ट्रीय काल के रूप में वगीकृत किया गया है। जापान की संस्कृति में हीयान काल का समय वह समय था जब बौद्ध धर्म का यहाँ के संगीत पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस समय होने वाले बौद्ध अनुष्ठान संगीत ने यहाँ की गायन शैली को प्रभावित किया।

वर्तमान समय में जापान को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा संगीत बाजार माना जाता है। जिसका स्थान एशिया में सबसे बड़ा है। आधुनिक संगीत के अन्तर्गत यहाँ संगीत की विभिन्न शैलियाँ जैसे– एंका, जे–पॉप, गेंडाई होगाकु, शिन होगाकु आदि प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

संगीत का मानव सभ्यता में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत केवल एक कला नहीं है बल्कि यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा हुआ है। विभिन्न संस्कृतियों एवं परंपराओं में संगीत की भूमिका समाज की मानसिकता, विचार, धार्मिक आस्थाओं तथा सांस्कृतिक पहचान को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम है। संगीत विभिन्न समुदायों को जोड़ने का कार्य करता है तथा उनकी भावनाओं को व्यक्त करने व दिशा निर्देश देने का कार्य करता है। विभिन्न संस्कृतियों में संगीत के विविध रूपों का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि संगीत मानवता की एक सार्वभौमिक भाषा है, जो दिल को छूने की क्षमता रखती है।

संदर्भ

1. संस्कृति है क्या?: रामधारी सिंह 'दिनकर' hindikahani.hindi-kavita.com
2. संगीत परिचय, संगीत विभाग–मानविकी विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्दवानी। uou.ac.in
3. पश्चिमी संगीत। इतिहास, कलाकार, गीत, वाद्ययंत्र, उदाहरण और तथ्य www.britannica.com
4. पश्चिमी संगीत का इतिहास। अवलोकन और समय रेखा–पाठ study.com
5. ब्लूज। आज के लोकप्रिय गाने। संगीत शैलियाँ। लेख और निबंध अफ्रीकी संस्कृति में ध्वनि और संगीत का महत्व www.wildernessdestinations.com
6. अध्याय 7: अफ्रीकी, अरब जगत, भारत और चीन के संगीत में रूप और शैलियाँ pressbooks.cuny.edu
7. The Insider's Travel Guide Mysterious Greece mysteriousgreece.com wikipedia.org
8. वसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण– 23, 1999, पृ० सं०–416, 421।